- आपातकालीन स्थिति में पशु आहार में अचानक बदलाव होते हैं जिस से पशुओं में पाचन से सम्बन्धित समस्याएं होती हैं। इन समस्याओं के बचाव के लिए यथा सम्भव सुपाच्य एवं संतुलित आहार देना सुनिश्चित करें तथा आवश्यकता पड़ने पर पशु चिकित्सक से सलाह लें।
- बाढ़ के दौरान और उसके बाद स्थानीय अधिकारियों, पशुचिकित्सा कर्मियों के साथ नियमित संपर्क में रहें, जिससे आपको आवष्यक सूचनाएं और सहायता समय पर मिल सके।
- बाढ़ के बाद परजीवी संक्रमण की संभावना बहुत बढ़ जाती है, इसलिए बाढ़ के बाद पशुचिकित्सक से सलाह लेकर अपने सभी पशुओं को कृमि नाशक दवाई जरूर दे देवें।
- नम व गरम मौसम में मक्खी मच्छर बहुत बढ़ जाते हैं, जो पशुओं के लिए परेशानी का कारण तो बनते ही हैं, साथ ही बिमारियां फैला कर पशुओं की उत्पादन क्षमता में भी कमी लाते हैं। इनसे बचाव के लिए मच्छरदानी ही श्रेष्ठ उपाय है।

अधिक जानकारी के लिए आप अपने निकटम पशु चिकित्सालय या पशु औषधालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

मुख्य सम्पादक :

डॉ॰ एल॰ सी॰ रंगा, पी॰ एच॰ डी॰

महानिदेशक

सम्पादक :

डॉ॰ सुखदेव राठी, उपनिदेशक

डॉ॰ नरेन्द्र ठकराल, पशु चिकित्सक

पशुपालन से सम्बंधित अन्य पुस्तकें
Download करने के लिए
QR Code Scan करें

पशुपालन एवं डेयरी विभाग, हरियाणा

बाढ़ से पशुधन की सुरक्षा के उपाय

पशुपालन एवं डेयरी विभाग, हरियाणा

बेज नं. 9–12, सैक्टर –2, पंचकुला, हरियाणा

फोन : 0172–2574663–64

ईमेल : dg.ahd@nic.in

बाढ़ से पहले

- अपने सभी पशुओं को पशुपालन विभाग द्वारा लगाया जाने वाला 12 अंकों का टैग अवश्य लगवाकर रखें, ताकि किसी भी आपात स्थिति में पशु की पहचान की जा सके।
- अपने पशुओं को विभिन्न बीमारियों जैसे मुहखुर, गलघोटू आदि से बचाव के टीके निर्धारित समय पर अवष्य लगवाएं।
- वर्षा ऋतु शुरू होने से पहले ही पशु चिकित्सक से सलाह लेकर अपने सभी पशुओं को कृमि नाशक दवाई जरूर दे देवें।
- अपने पशुओं का विभाग द्वारा चलाई जा रही पशुधन बीमा स्कीम में बीमा अवश्य करवाएं। पशुओं की अकाल मृत्यु के समय यह बीमा बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।
- मौसम की भविष्यवाणियों और बाढ़ के संभावित खतरों के बारे में जागरूक रहें।
- अपने पशुधन के लिए बाढ़ की स्थिति में एक निकासी योजना बना कर रखें, जिसमें ऊंचाई पर सुरक्षित आश्रय की पहुंच शामिल हो। बाढ़ की आशंका होने पर अपने पशुओं को योजना अनुसार निर्दिष्ट स्थान पर स्थानांतरित कर दें।
- यदि सम्भव हो तो आपातकाल में उपयोग हेतु चारा, पानी आदि की कुछ मात्रा को बाढ़ से सुरक्षित किसी ऊंचे एवं सुविधाजनक पहुंच वाले स्थान मे भण्डारण करके रखें।
- सभी प्रकार कीटनाशकों को किसी ऊंची महफूज जगह पर रखना चाहिए, ताकि ऐसी चीजें पानी में घुल कर पानी को जहरीला न कर सकें।

बाढ़ के दौरान

- जब बाढ़ का पानी लगातार बढ़ रहा हो तथा पशुओं की सुरक्षित निकासी संभव न हो, ऐसी स्थिति में पशुओं की बेल/रस्सी खोल देना हितकर है, क्योंकि बंधा हुआ पशु खुद का बचाव नहीं कर पाता जबकि खुले पशु की तैरकर खुद को बचाने की सम्भावना अधिक होती है।
- पानी में खड़े पशुओं में हाइपोथर्मिया (शरीरिक तापमान सामान्य से कम होना) त्वरित रूप से विकसित हो सकती है, तथा पशुओं के खुर व त्वचा गलने की समस्या आ सकती है। इसलिए जितना जल्दी हो सके पशुओं को सूखे स्थान पर ले जाने का प्रयास करना चाहिऐ।
- पशुओं को पर्याप्त मात्रा में ताजा पानी प्रदान करना पहली प्राथमिता होनी चाहिए। बाढ़ का पानी प्रदूशित तथा रोगाणुओं से भरा होता है जिसे पीने से पशु गम्भीर रूप से बीमार हो सकते हैं। यदि स्वच्छ जल उपलब्ध न हो सके तो पानी मे लाल दवाई अवश्य मिला लें।
- पशुओं को पौष्टिक चारा देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, खासकर जब वे अपनी जान बचाने के लिए तैरने में सारी शारीरिक उर्जा खर्च कर चुके हों। विशेष रूप से ग्याभन पशुओं को यदि पर्याप्त रूप से खिलाया नहीं जाता है, तो उनमें तेजी से ऊर्जा, विटामिन तथा खनिज की कमी हो जाती है, जिससे उनकी मृत्यु भी हो सकती है।
- ध्यान दें कि चारे में फफूंद आदि न लगी हो। फफूंद वाले चारे से पशओं की जान भी जा सकती है तथा दूध में आने वाले जहरीले पदार्थों की वजह से मनुश्य के स्वास्थ्य पर भी गम्भीर प्रभाव पड़ सकता है।
- बाढ़ की स्थिति में सूखा या मिश्रित चारा, हरे चारे से बेहतर है क्योंकि सूखा चारा पाचन ऊष्मा उत्पन्न करेगा, जो पशुओं को हाईपोथर्मिया से बचाता है।
- सभी पशुओं की घाव आदि के लिए जांच की जानी चाहिए। खुले घाव होने पर पशुचिकित्सक के मार्गदर्शन में मरहम पट्टी की जानी चाहिए।
- गीली भूमि पर पशुओं में थानों की बीमारी बहुत जल्दी हो जाती है। थनैला से बचाव के लिए पशु को नियमित रूप से दुहते रहें व दूध निकालने से पहले तथा बाद में थानों को लाल दवाई से अच्छी तरह धो लें।
- किसी भी पशु की मृत्यु होने पर उसे शीघ्र दफना देना चाहिए। दफनाने के लिए खोदे जाने वाले गड्ढे की गहराई लगभग 6 फीट होनी चाहिए। गड्ढा किसी बांध, नदी के किनारे, कुंए या कि अन्य जल स्त्रोत से कम से कम 100 फुट की दूरी पर स्थित होनी चाहिए। मृत जानवर को कम से कम 30 इंच की मिट्टी से ढंकें।
- यदि मृत पशु का बीमा हुआ हो तो पशु का टैग सहित फाटो व विडियो बना लें तथा सम्बन्धित बीमा कम्पनी व पशुचिकित्सक को अवश्य सूचित करें।

बाढ़ के बाद

- जब बाढ़ का पानी सुख जाए, तो पशुओं की वापसी करने से पहले सतर्कतापूर्वक क्षेत्र का मूल्यांकन करें।
- पशुशालाओं में बाढ़ के बाद पशुओं का बाधने से पहले उन्हें कीटाणुनाशक दवा से साफ करें।
- बाढ़ के बाद कुछ दिन तक पशुओं को कच्ची दीवारों, कोठड़ों, बिजली की लाईनों, खंभों आदि से दूर बांधें क्योंकि ऐसे समय में कच्ची दीवारों व कोठड़ों के गिरने की सम्भावना अधिक रहती है।
- बाढ़ के बाद कुछ दिनों तक पशुओं को बाढ़ प्रभावित खुली चारागाहों में न लें जाएं क्योंकि ये चारागाहें बिमारी पैदा करने वाले विशाणुओं व परजिवियों से भरपूर होती हैं तथा पशुओं को गम्भीर बीमार कर सकती हैं।